नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 13, अंक : 1, जनवरी 2025

भारतीय चित्रकला के सौन्दर्यपरक पहलू में संगीत का प्रभाव

निहारिका

शोधार्थी, छापाकला विभाग, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़, छत्तीसगढ़

सार-संक्षेप

भारतीय परिदृश्य में ललित कला को सदैव अत्यंत ऊँचा स्थान दिया गया है। जिसका एकमात्र उदेश्य आनंद की अनुभूति तथा अभिव्यक्ति हैं। भारतीय कला की एक अद्भुत विशेषता रही है, जिनमें भारतीय जन-जीवन का दर्शन किया जा सकता है। इन कलाओं के माध्यम से हम न केवल उसमें निहित विचार, धर्म और संस्कृति का अनुभव एवं अवलोकन कर सकते है बल्कि यह भी समझ सकते है कि कला ने विभिन्न कालक्रमों में कैसे प्रभाव डाले है। कला हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है, जो मनुष्य के हृदय को परिष्कृत एवं अलंकृत करने का प्रयास करता है। जिनके साक्ष्य विभिन्न कालों में निर्मित उत्कृष्ट कलाकृतियों के द्वारा प्राप्त होते रहे हैं। इन कलाकृतियों में भाव एवं सौंदर्य के अद्वितीय मिश्रण दृष्टिगत होते है। संगीत, भारतीय चित्रकला का अत्यन्त प्राचीन विषय रहा है जिसके परिणामस्वरूप रेखा, लय एवं गति जैसे अभिव्यक्ति के प्रभावी माध्यम से दर्शक और कलाकार के बीच त्वरित संवाद स्थापित हो जाता है, जिससे तत्कालीन जन-जीवन में संगीत की महत्ता का पता चलता हैं॥ भारतीय कला में अनेकों उदाहरण प्राप्त है जैसे–प्रागैतिहासिक शैल चित्र, अजंता भित्ति चित्र, लघु चित्र शैली आदि जिनके द्वारा मनुष्य ने अपने अंदर छिपी भावनाओं को मूर्त रूप प्रदान किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में मुख्य रूप से चित्रकला में संगीत के प्रभावों की संक्षिप्त चर्चा की गई है इसके साथ ही इसमें निहित सौन्दर्य को भी समझाने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द :

शोध-पत्र

शोध परिकल्पना

चित्रकला और संगीत मानव सभ्यता के विकास के साथ ही एक-दूसरे के पूरक रहे हैं। संगीतमय विषयों से संबंधित चित्रों में सौन्दर्य निहित होता है। गुफा चित्रों, भित्ति चित्रों और लघु चित्रों आदि में संगीत को चित्रात्मक रूप में परिलक्षित किया गया है। जिसको दृश्यात्मक तत्वों (रेखा, रंग और रूप आदि) के द्वारा उसमें निहित रस और भावों को ग्रहण किया जा सकता है।

शोध उद्देश्य

चित्रकला तथा संगीत में परस्पर सम्बन्धों का अध्ययन करना इसके साथ ही चित्रों में संगीत के सौंदर्यात्मक पक्ष के प्रभाव को स्पष्ट करना ही इस शोध का मुख्य उद्देश्य है। इसके साथ ही साथ संगीतमय चित्रों के माध्यम से भाव और रस को व्यक्त किया गया है या नहीं इसकी जाँच करना है।

शोध की प्रासंगिकता

चित्रकला और संगीत दोनों ही भारतीय संस्कृति और धर्म के अभिन्न अंग रहे हैं। संगीत और चित्रकला, दोनों कलाओं में सौंदर्यात्मक पक्ष निहित होता है। इस शोध से यह स्पष्ट होगा कि किस प्रकार चित्रकार ने संगीत के तत्वों (लय, स्वर और ताल) से प्रभावित हो कर अपने चित्रों में दृश्य कला के तत्वों (रेखा, रंग, और रूप आदि) को संयोजित कर उसके सौंदर्यात्मक रूप को अंकित किया है इसकी जानकारी प्राप्त होगी।

शोध विधि

मैंने विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक विधि का प्रयोग अपने शोध कार्य में किया है। प्रस्तुत शोध का अध्ययन मूल रूप से द्वितीयक दत्तों पर आधारित है। जिसमें विषय से संबंधित पुस्तकों, व्यक्तिगत लेखों, प्रकाशित लेखों, पत्र-पत्रिकाएं, पुस्तकालय, इंटरनेट आदि को सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तावना

मानव एक संवेदनशील प्राणी है जो अपने भाव की अभिव्यक्ति किए बिना नहीं रह सकता। इन्ही भावों को व्यक्त करने के लिए उसने भिन्न भिन्न माध्यमों की खोज की, कला जिसका एक साकार रूप है। चित्र और संगीत दोनों ललित कला के महत्त्वपूर्ण अंग है, जिसके रसस्वादन से मनुष्य को आनन्द की अनुभूति होती है। मनुष्य के लिए ये कलाएँ प्राणदायिनी गंगा के समान है जिनके अभाव में मानव जीवन नीरस हो

जाता है। इन कलाओं को प्राणदायिनी इसलिए कहा जाता है क्यूकि ये मनुष्य के नीरसपूर्ण जीवन को उल्लास तथा आनन्द से भर देती है।

यथा नृत्ते तथा चित्रे त्रैलोक्यानुकृति स्मृतः।
दृष्टर्यस्तु तथा भाव अगं गोपांग गानि सर्वशः॥

कराश्च ये मता नत्ते पूर्वोक्ता नृपसत्तमं।
त एव चित्रे विज्ञेमा नृतं चित्रम परम मतम्॥ (वर्मा 1)

अर्थात् विभिन्न कलाओं की दृष्टि, अभिनव अंगोपाग आदि मिलकर एक परमचित्र का निर्माण करते हैं। सभी कलाएँ भिन्न-भिन्न होती है परंतु उन सभी के माध्यम से चिंतन और विवेचन कर मनुष्य को परम सुख की अनुभूति होती हैं। किसी बाह्य माध्यम के द्वारा मनुष्य जब अपने भावों की सौंदर्यपूर्ण अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है तो उसे कला कहते है। ये माध्यम स्वर, चित्र, शब्द या अन्य कोई भी हो सकते हैं। माध्यम के कारण ही इन कलाओं में विविधता आती है जिस प्रकार चित्रकला में अलग-अलग रंग, रेखा व रूप होते है (श्रीवास्तव 10) उसी प्रकार संगीत में भिन्न-भिन्न स्वर व ताल के संयोजन से सशक्त एवं प्रभावी भाव से सौन्दर्यपूर्ण रचना का निर्माण होता है। संगीत एवं चित्रकला में जो सामान्य लक्षण है जो मनुष्य को इसमें जीवंतता का अनुभव कराता है, वह लय है जो चित्र तथा संगीत में प्राण भर देते है। मनुष्य के आचार-विचार का समन्वय ही संस्कृति कहलाता है। भारतीय दर्शन, साहित्य एवं विभिन्न धार्मिक मान्यताओं का अनुभव कलाओं के माध्यम से किया जा सकता है। प्रकृति के कण-कण में संगीत तथा चित्र विद्यमान है। संगीत जिससे मनुष्य ही नहीं बल्कि पशु-पक्षी भी आकर्षित होते है। संगीत को न केवल स्वर, नृत्य और वाद्य तक सीमित रखा गया है अपितु इसे चित्रकला में भी उच्च स्थान प्राप्त हैं। संगीतकार दृश्य रूपों की कल्पना करके धुन की रचना करता है तो वही एक चित्रकार संगीत के अमूर्त स्वरों तथा लय से प्रभावित हो कर उसे एक रूप प्रदान करता है।

मार्कण्डेय मुनि द्वारा रचित विष्णुधर्मोत्तर पुराण के चित्रसूत्र में उन्होंने बताया है–**विना तु नृत्यशास्त्रे चित्रसूत्रम् सुदुर्विदम्**। (वाजपेयी 175) अर्थात् नृत्य शास्त्र को सीखे बिना चित्रकला को नहीं सीखा जा सकता। चित्रकला की एक विशेषता रही है कि एक चित्रकार प्रकृति में विद्यमान समस्त वस्तुओं को एक नवीन रूप प्रदान कर सकता है इतना ही नहीं बल्कि चित्रकला में संगीत तथा काव्य जैसे अमूर्त भावों को चित्रकला के द्वारा जितना सुरक्षित रखा जा सकता हैं उतना किसी भी अन्य कला में संभव नही है। चित्रकला तथा संगीत कला एक दूसरे के पूरक है तथा एक दूसरे को सदैव प्रभावित कर फलते-फूलते रहे है तथा एक दूसरे से प्रभावित हो के रस एवं सौन्दर्य की अनुभूति कराते रहे है। संगीत कला का जब किसी मंच पर प्रदर्शन किया जाता है तो एक चित्रकार उस रूप को अपने अंतर मन द्वारा उत्पन्न प्रक्रिया का ध्यान करके वह चित्रपट या अन्य किसी धरातल पर चित्र के रूप में अपने भाव को हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है जैसे–सरस्वती कहने पर उनकी एक छवि, कृष्ण लीला की झलक इत्यादि हमारे मस्तिष्क में अंकित हो जाती है। (माथुर 1)

गुफा चित्र

चित्र 1- भीमबेटका गुफा चित्र (Art history summary. periods and movement through time)

चित्रकला आदि काल से भाव अभिव्यक्ति का सबसे सरल माध्यम होने के कारण मनुष्य के बोलचाल की भाषा रही है। भारतीय कला के उपलब्ध साक्ष्यों से पता चलता है कि प्राचीन काल से ही संगीत संबंधित चित्रों का विशेष महत्त्व रहा है। संगीतमय चित्रों का प्रथम साक्ष्य प्रागैतिहासिक कालीन (मिजार्पुर, पंचमढ़ी, भीमबेटका, रायगढ़, मन्दसौर आदि) चित्रों से प्राप्त होता है। आदि मानव अपने आनन्द को नृत्य आदि के माध्यम से प्रकट करते थे। इस समय सामूहिक नृत्य का प्रचलन शुरू हो गया था, प्राप्त चित्रों के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि आदिमानव को नृत्य का ज्ञान अवश्य था। भारत से प्राप्त प्रागैतिहासिक चित्रों में शायद ही कहीं वाद्य यंत्रों का चित्रण किया गया हो इन चित्रों में नृत्यरत मनुष्यों का जो चित्रण किया गया है उन में संभवतः अनुष्ठानों या उत्सवों को दिखाया गया है। ऊपर दशार्ये गए चित्र (1) में हम देख सकते है की जानवर के चारों ओर नाचती हुई आकृतियाँ या सामुदाय किसी अनुष्ठान या उत्सव का संकेत दे रहे है, जिसमें संभवतः मंत्रोच्चार या आदिम संगीत तत्व शामिल हो सकते है। आकृतियों की लयबद्ध गति का अर्थ नृत्य हो सकता है, जो आम तौर पर संगीत या मंत्रोच्चार के साथ होता है। इस प्रकार के चित्रों में संगीत का प्रभाव संभवतः उस सामाजिक सामंजस्य और अभिव्यक्ति से जुड़ा होगा जो संगीत को बढ़ावा देता है। ऐसी कलाकृतियों में, संगीत और लयबद्ध गतिविधियों को अक्सर अप्रत्यक्ष रूप से दर्शाया जाता था। गुफा से प्राप्त चित्रों में आंतरिक रूप से लय निहित है तथा इसमें जो मुद्राएँ दिखाई गई है उनमें गति का प्रवाह दिखाई पड़ता है। इसके साथ ही यहाँ से प्राप्त चित्रों में अमूर्त प्रतीक तथा ज्यामिति आकृतियां भी भी है जिन्हें लयबद्ध रूप में अंकित किया गया है जो संगीतमय वातावरण की ओर संकेत देते है।

चित्र 2- नृत्य वादन (Historyreads)

एक कलाकृति में दो तत्वों का सामागम होता हैं पहला उसमे निहित भाव तथा दूसरा उसका सौन्दर्यात्मक पक्ष। अजंता, एलोरा, जोगिमारा तथा बाघ गुफाओं में निर्मित भित्ति चित्र भारतीय कला के उत्कृष्ट उदाहरणों में से एक हैं। अजंता विश्व विख्यात है जो अपने जातक कथाओं और प्राचीन भारतीय मनुष्य के दैनिक जीवन के जीवंत दृश्यों और अपने कलात्मक सौन्दर्यपूर्ण रचना के लिए जाना जाता है। यहाँ संगीत की त्रिवेणी(नृत्य, गायन तथा वादन) का सौंदर्य भी दृष्टव्य होता है। अजंता से प्राप्त चित्रों में संगीत सभाओं, संगीतज्ञों और नर्तकियों के दर्शन किये जा सकते है। यहाँ पर दशार्ये गए वाद्य यंत्रों के चित्र इस बात की ओर इशारा करते हैं कि संगीत किस प्रकार दरबारी तथा धार्मिक जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग था इसके साथ ही इन भित्ति चित्रों में महिला तथा पुरुष संगीतकारों के चित्रण से पता चलता है कि उस समय संगीत का प्रयोग सम्मानित कला के रूप में होता था। यहाँ पर बनाए गए चित्रों में अक्सर समूह में संगीतकारों को दिखाया गया जो सामूहिक प्रदर्शन की व्यापकता को दर्शाता है जैसा की हम ऊपर प्रस्तुत किए गए चित्र (2) में हम देख सकते है इस कलाकृति के सभी पात्र किसी सामाजिक या संगीतमय सभा में लगे हुये हैं। कुछ आकृतियाँ उन हस्त मुद्राओं को प्रदर्शित करती हैं जो अक्सर पारंपरिक नृत्य या संगीत दृश्यों से जुड़ी होती है। भाव और मुद्राएँ अत्यंत सूक्ष्म होते हुए भी सामंजस्य और लय की भावना पैदा करती हैं, जिससे पता चलता है कि पात्र किसी संगीत समूह या सभा का हिस्सा हो सकते हैं। अजंता के चित्र पौराणिक कथाओं को दर्शाते हैं जिसमें मुख्यतः दैवीय आकृतियों को दर्शाया गया है, जिससे यह कहा जा सकता है कि ईश्वर से जुड़ने का एक साधन संगीत भी है। भित्ति चित्रों में परिलक्षित ये चित्र हमें इस बात की पुष्टि कराते हैं कि कला, और धर्म परस्पर एक-दूसरे से जुड़े हुए थे। कुछ विद्वानों द्वारा कहा गया है कि संगीत ने विभिन्न धार्मिक प्रथाओं के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। प्राप्त भित्ति चित्रों के भाव-भंगिमाओं में लय और गति का समावेश दिखाई पड़ता है। इन चित्रों में निहित भाव तथा सौन्दर्य से मनुष्य मंत्रमुग्ध हो जाता है।

लघु चित्र

चित्र 3- राग मेघ (Me meraki)

संगीत तथा चित्र का अद्भुत मिश्रण लघु चित्रों(पहाड़ी और राजस्थानी) में भी देखने को मिलता है। जो चित्र राग पर आधारित होते हैं उन्हे प्रायः रागमला के नाम से जाना जाता है। जिसका प्रारम्भ 16वीं और 17वीं शताब्दी में राजस्थान में हुआ इसके अतिरिक्त अन्य स्थानों पर भी इसका चित्रण हुआ है। रागमला का अर्थ है–'रागों की माला या शृंखला'। मध्य काल में निर्मित राग चित्र चित्रकला मील के पत्थर के समान हैं। प्रत्येक राग का अपना एक भाव, वातावरण तथा समय होता है जिसके अनुरूप ही उसे चित्रित किया जाता है जैसे–मेघ राग को वर्षा ऋतु से जोड़ा जाता है तथा इन चित्रों में बारिश और काले बादल के साथ-साथ हरे-भरे पृष्ठभूमि से निहित सौन्दर्य को हम देख सकते है। (शर्मा 128) जो बारिश आगमन को दिखाता है इसके साथ ही नायक-नायिकाओं को प्रेम भाव परिपूर्ण दिखाया गया है तथा इनकी शारीरिक मुद्राओं में लय विद्यमान है। इस प्रकार हम राग चित्रों के माध्यम से विभिन्न रागों में निहित भावों को समझ सकते है तथा उनका अनुभव कर सकते है। लघु चित्रों में संगीतरत विषयों का चित्रण केवल शाब्दिक न होकर प्रायः प्रतीकात्मक होता था इन चित्रों के सभी चरित्रों का चित्रण उस परिवेश भाव या रस और उनकी मुद्राएँ को प्रतिबिंबित करती है जो एक सांगीतिक वातावरण के लिए अनिवार्य रूप से विद्यमान होनी चाहिए। रागमाला चित्रों के माध्यम से राग को मानवीय रूप प्रदान किया गया है जिसमें रागों के भावनात्मक सार को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए मनुष्य या दिव्य आकृतियों का चित्रण किया गया है। इन चित्रों में कलाकारों ने रंग तथा रेखाओं के माध्यम से राग जैसे अमूर्त भाव की अभिव्यक्ति करने का अनूठा प्रयास किया है। लय, गति संतुलन आदि का प्रयोग दोनों ही कलाओं में किया जाता है। वर्तमान समय में भी इन चित्रों को देख के मनुष्य मंत्रमुग्ध हो जाता है। (गुप्त 2)

संगीतमय चित्रों में सौन्दर्य केवल दृश्य तत्व ही नहीं होते बल्कि इनमें लय और ताल का भी योगदान होता हैं। भारतीय सौंदर्यशास्त्र के अंतर्गत रस का महत्त्व होता है जो किसी भी कला की आत्मा मानी जाती है। भरतमुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र में आठ रसों का वर्णन किया गया है–शृंगार, हास्य, अद्भुत, वीर, रौद्र, वीभत्स, भयानक और करुण। (सक्सेना आदि 82) जिनके माध्यम से दर्शक उस कलाकृति में निहित सौंदर्य व भाव का आनंद ले पाते हैं। शृंगार रस प्रेम रूपी सौंदर्य की भावना को दर्शाता है। चित्रकला में इस रस के माध्यम से संगीत और प्रेम से संबंधित दृश्यों का अंकन होता है, (प्रताप 246) जिसमें रेखा की कोमलता और रंगों की मधुरता द्वारा शृंगार भाव व्यक्त किया जाता है। रागमाला चित्रों में इस रस को प्रत्यक्ष रूप में देखा जा सकता है, जिसमें राग रागनियों के प्रेम और शृंगार के भाव को चित्रकारों द्वारा मूर्त रूप में रेखांकित किया गया है। जिस प्रकार संगीत में शांत रस का महत्त्व है उसी प्रकार चित्रों में भी इसका प्रत्यक्षज्ञान प्रस्तुत किया जा सकता है। चित्रों में इस रस को हल्के रंग और सरल रेखाएँ के द्वारा अंकित करते हैं जिससे हमारे चित को शांति और स्थिरता का अनुभव होता हैं। कलाकार अपने चित्रों में धूमिल रंगों और कोमल रेखाओं का उपयोग करके करुण रस के द्वारा दुख और दर्द के भावों को धरातल पर चित्रित करता है, जिस प्रकार के दृश्यों का अंकन विरहणी नायिकाओं के चित्रों में दृष्टिगत हुआ है। इन चित्रों में करुण रस स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जो दर्शक के हृदय को स्पर्श करने वाली करुणा को उत्पन्न करता है। जिस प्रकार संगीत में सात स्वर होते हैं उसी प्रकार चित्रकला में सात रंगों के भिन्न-भिन्न अनुपातों का प्रयोग कर चित्रकार अपनी कृति का निर्माण करता है। जिस प्रकार स्वरों का अपना एक भाव होता है उसी प्रकार सभी रंगों के अपने अलग-अलग भाव होते हैं। जिनके विभिन्न प्रयोगों से चित्रकार अपने चित्रों में भावों की अभिव्यक्ति के लिए रंग, रेखा तथा शारीरिक भाषा का प्रयोग कर राग के भाव को प्रदर्शित करने का प्रयास किया है। (सक्सेना 83-84)

निष्कर्ष

एक चित्रकार संगीत का उसके अन्तर मन पर पड़ने वाले प्रभाव जो कि अमूर्त रूप में है उसे दृश्य कला के तत्वों(रेखा, रूप, रंग, तान, पोत और अन्तराल) द्वारा मूर्त रूप में अभिव्यक्त करता है। प्रत्यक्ष दिखाई देने वाली वस्तुओं का चित्रण फिर भी सरल है किन्तु मन में उत्पन्न भाव का चित्रण अत्यंत (प्रताप) (me meraki) (शर्मा) कठिन होता है। संगीतमय चित्रों की रचनात्मकता, यथार्थपरकता तथा उसमे निहित रंग अलग ही सौन्दर्य का बोध कराते हैं। रेखाओं के गत्यात्मकता तथा रंगों के मिश्रण से जिन चित्रों की रचना हुई है वो अद्वितीय है। एक संगीतकार ने लौकिक-अलौकिक सौन्दर्य के लिए धुन/सुरों की रचना की है तो वही एक चित्रकार ने अपनी कृतियों में उस सुंदरता को रेखा, रंग योजना, आकारों के संयोजन और छाया-प्रकाश से प्रकट किया है। ये कलाएँ अभिव्यक्ति का ही अलग-अलग माध्यम है जिनका एकमात्र लक्ष्य रसनिष्पत्ति है। भाव के द्वारा ही रस की निष्पत्ति संभव है। रस एक प्रकार का कलात्मक अनुभव या आनन्द है। वस्तुतः इन कलाओं में भिन्न-भिन्न तत्व होते हुए भी इनमें अन्तःसंबंध है। इनके अन्तःसंबंध के कारण सौंदर्यशास्त्र का उद्भव होता है। ध्वनि और रूप के समन्वय से एक दिव्य भाव और उच्चतम सौन्दर्य का जन्म होता है। जो मनुष्य के दैनिक जीवन की एकरसता को दूर करके उसमें भाव, रस और आनन्द को भर देता है। एक कलाकार की कलाकृति में यदि सौन्दर्य चेतना है तो दर्शक को उस कृति में निहित सौन्दर्य का बोध होना अनिवार्य है जिसके पश्चात ही उसे उस कला का आनन्द प्राप्त होता है। संगीत और चित्र के संगम को हम संगीतमय चित्रों के माध्यम से देख सकते है। संगीत के समस्त भाव को एक माला के रूप में गूंथ कर चित्रकारों ने उसे एक कलात्मक स्वरूप प्रदान किया है। संगीतमय चित्रों में मूर्त व अमूर्त दोनों का समान महत्त्व है किसी एक के भी अभाव में दूसरी अधूरी दृष्टिगत होती है। दोनों कलाओं का विकास एक साथ हुआ जो मनुष्य के भाव अभिव्यक्ति के दो समांतर परंतु आपस में परस्पर जुड़ी हुई धाराओं के रूप में संलग्न है जो शब्दों से परे के अर्थ को व्यक्त करने में सक्षम है।

सन्दर्भ सूची

1. Art history summary. periods and movement through time. http://arthistorysummerize.info. 5 10 2013. 28 10 2024. <http://arthistorysummerize.info/ArtHistory/illuminating-manuscripts/>.
2. Historyreads. https://deccanviews.in. 22 07 2016. 28 10 2024. <https://deccanviews.in/2016/07/22/feminine-in-indian-art-paintings-from-ajanta-caves/>.
3. Me meraki. https://memeraki.com. 06 06 2023. memeraki. website. 28 10 2024. <https://memeraki.com/collections/all/shehzad-ali-sherani?filter.p.m.artwork.artwork_theme=Radha&page=5>.
4. माथुर, कुमकुम, ''संगीत में रंगों का समन्वय(रागमला के विशेष सन्दर्भ में)'' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च-ग्रंथालय ISSN-2350-0530 (दिसम्बर 2014), हिन्दी
5. वाजपेयी, राजेन्द्र, सौन्दर्य, भोपालः मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2001, हिन्दी
6. रीता प्रताप, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2016, हिन्दी
7. सक्सेना, सुधा, आनन्द लखटकिया सरन बिहारी लाल सक्सेना, कला सिद्धांत और परम्परा, बरेली, रजा बर्की प्रेस, 2005, हिन्दी
8. वर्मा, विनीता, संगीत की राग रागिनियों का रंगों द्वारा मनभावन चित्रण, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च-ग्रंथालाय ISSN-2350-0530 (दिसम्बर 2014),1, हिन्दी
9. श्रीवास्तव रेखा, अभिव्यक्ति के बदलते साधन, शोधनिधि (2009 से जून 2010): 10. हिन्दी
10. लोकेश चंद्र शर्मा, भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, मेरठः कृष्णा प्रकाशन मीडिया, 2004, हिन्दी
11. वैशाली गुप्त, ''संगीत एवं चित्रकला का अन्तर्सम्बन्ध एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी 2022 हिन्दी <http://hdl.handle.net/10603/562667>